भजन

तर्ज ....ए मेरे प्यारे वतन

अर्ज करती है दुल्हन पकड़ कर धनी के चरण, सुन लो मेहरबान
खुद को भूली है जो रूह उसका है बस तूही तूं,तुझ पे रूह कुरबान

1) मेहर के सागर धनी, मैं लहर हूँ आपकी
इश्क देखा आपका, जानी साहेबी आपकी
अब तो है बस ये लगन, देखूं अपना मूल तन
हैं बका मे जहाँ, खुद को भूली.....

2) सारे अंगो से धनी, आपकी सेवा करूं
आप दुल्हा मैं दुल्हिन, वचन ये दृढ़ कर कहूं
रब्द को करके दफन, तोड़ दो झूठा सुपन
अंग लगे अंगना, खुद को भूली.....

3) कुछ तेरी अर्जी करें, कुछ फना में गर्क है
कुछ का मन चलने को है, कुछ के मन में तर्क है
खेल कैसे हो खत्म, सोच कर हैं आंखें नम
साथ है हैरान, खुद को भूली.....